शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० हि० - पत्र

जयद्रथ - वध

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

सुत-घातकों को देखते ही पार्थ मानो जल उठे,
मुख मार्ग से क्या क्लेश ही तो वे वहाँ न उगल उठे ॥
"आचार्य! मेरा हस्त कौशल देख लेना फिर कभी,
अभिमन्यु का बदला तुम्हें लेकर दिखाना है अभी।"
इस भाँति बातों में समर का श्रीगणेश हुआ जहाँ,
होने लगा तत्काल ही अति-तुमुल कोलाहल वहाँ।
ज्यों नीर बरसाते जलद करते हुए गुरु गर्जना।
लड़ने लगे दोनों प्रबल-दल कर परस्पर तर्जना ॥

भावार्थ

अर्जुन गुरु द्रोणाचार्य की बातों का उत्तर देते हुए कहते हैं कि अभिमन्यु को मारने वाले को देखकर मैं जल उठा परन्तु मैं अपने भीतर की उस आग को मुख मार्ग से प्रकट नहीं किया। इसके पश्चात् अर्जुन कहते हैं कि हे आचार्य मेरा हस्त कौशल फिर कभी देख लेना। अभी तो मुझको तुम अभिमन्यु का बदला लेकर दिखाने दो।

इस प्रकार आचार्य और शिष्य के वार्तालाप से युद्ध आरम्भ हो गया। वहाँ उसी समय से भयंकर कोलाहल होने लगा। जिस प्रकार जल बरसाते हुए मेघ भयंकर रूप से गर्जना कर उठते हैं उसी प्रकार दोनों प्रबल दल एक दूसरे को डराते-धमकाते हुए लड़ने लगे।

राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से जहाँ अर्जुन के आक्रोश का विस्तार से वर्णन किये हैं वहाँ दोनों पक्षों के बीच भयंकर युद्ध का भी दर्शन कराते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ज० सं० महावि० सलखुआ, पूर्णियाँ

भारती द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० –पत्र

निबंधमाला

शीर्षक – 'गृत्समद'

लेखक – विनोबा जी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर–

प्रश्न: ऋषि गृत्समद गणित के किस सूत्र का आविष्कार किये थे?

उत्तर:- ऋषि गृत्समद उच्च कोटि के गणितज्ञ के साथ-साथ महान आविष्कारक भी थे। इसके पूर्व लोग जोड़-घटाव की विधियाँ ही जानते थे। जिस दिन इन्होंने गुणन पद्धति का आविष्कार किया उस दिन वे बहुत प्रसन्न हुए। इन्होंने दो से दस तक पहाड़े बनाए और खुशियों में पहाड़ों से ही इन्द्रदेव का आह्वान शुरू किया। हे इन्द्र तू दो घोड़ों के, चार घोड़ों के, छः घोड़ों के और दस घोड़ों के रथ में बैठकर आप आ और। जल्दी से आप चले आईये। इसप्रकार ऋषि गृत्समद ने गुणन पद्धति का आविष्कार किया।

प्रश्न:- 'नक्षत्र विद्या' के सन्दर्भ में ऋषि गृत्समद के विचारों को स्पष्ट करें।

उत्तर:- ऋषि गृत्समद नक्षत्र विद्या के भी महान पंडित थे। उनकी मान्यता थी कि चन्द्रमा का प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ता है। चन्द्रमा में मातृ वृत्ति रम गई है। वह अपनी कलाओं द्वारा सूरज की किरणों को पचाकर, उन्हें भावनामय सौम्य रूप देकर माता के गर्भ में रहने वाले कोमल शिशु तक उस जीवनामृत को प्रेम एवं कुशलता के साथ पहुँचाता है और यह कार्य वह निरन्तर करता रहता है। गृत्समद का यह आविष्कार इतना पेचीदा है कि इसमें गणित, किरण-विज्ञान और मनोविज्ञान तीनों का समन्वय हो गया है। इसलिए आजतक इस सूत्र की पूरी व्याख्या नहीं हो सकी है।

चन्द्रमा की कलाओं की पूर्णता पूर्णिमा को होती है। इसका प्रभाव भी गर्भ पर पड़ता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय [illegible], पूर्णियाँ
25।03।20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०- पत्र
दिगंत भाग- 2 - गद्य खण्ड

शीर्षक - बातचीत
लेखक - बालकृष्ण भट्ट

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या

"यदि मनुष्य की इन्द्रियाँ अपनी- अपनी शक्तियों में ~~अविकल~~ अविकल रहतीं और वाक्शक्ति मनुष्यों में न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूँगी सृष्टि का क्या हाल होता।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 बातचीत शीर्षक निबंध से ली गयी है। इन पंक्तियों में विद्वान लेखक ने 'बातचीत' शीर्षक पाठ के प्रारंभिक दौर में ही वाक्-शक्ति और मनुष्य की अन्य इन्द्रियों के संदर्भ में अपने विचार को प्रकट किया है।

इस प्रकार प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा मनुष्य की वाक्शक्ति और उसकी अन्य इन्द्रियों के साथ प्रकृति के बीच समन्वय, अभिव्यक्ति एवं सुख-दुख के अनुभव को प्रकट करने में जो सहयोग मिलता है, उसकी जो उपयोगिता और महत्व है, उसपर निबंधकार ने अपने प्रखर विचारों द्वारा प्रकाश डाला है।

उपरोक्त पंक्ति में हिन्दी गद्य के महान निबंधकार बालकृष्ण भट्ट ने अपने विचारों को शब्द-बद्ध करते हुए कहा है कि अगर मनुष्य में वाक्शक्ति यानि बोलने की शक्ति नहीं होती तथा मनुष्य की दूसरी इन्द्रियाँ अविकल रहतीं, तो जीवन का सही आनन्द नहीं मिल पाता। प्रकृति ने सृष्टि की जो संरचना की है, वह गूँगी स्थिति में है। यानि प्रकृति का रूप मूक है। मौन ~~रूप~~ रूप में ही प्रकृति अपनी स्थिति की व्याख्या करती है। इन पंक्तियों के द्वारा निबंधकार के कहने का भाव यह है कि मानव के लिए वाक्शक्ति जो प्रकृति द्वारा वरदान के रूप में मिला है, उसके महत्व की व्याख्या नहीं की जा सकती है। आज जो कुछ भी सुख-दुःख की अभिव्यक्ति हम कर पाते हैं, उसमें वाक्शक्ति की ही प्रमुखता है। इस प्रकार अन्य इन्द्रियाँ भी हमारे जीवन में सहायक है किन्तु वाक्शक्ति की महत्ता सर्वाधिक है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरसंड, पूर्णियाँ
23.04.20